SHIKSHA SAMVAD
International Open Access Peer-Reviewed & Refereed
Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
Volume-02, Issue-03, March- 2025
www.shikshasamvad.com

व्यावसायिक नैतिकता – एक सामाजिक उत्तरदायित्व

अमित कुमार मिश्र
शोधार्थी
एल.बी.एस. पी.जी. कॉलेज, गोंडा (उ.प्र.)

वीरेन्द्र कुमार
शोधार्थी
एल.बी.एस. पी.जी. कॉलेज, गोंडा (उ.प्र.)

प्रो. (डॉ.) विजय कुमार अग्रवाल
प्रोफेसर
एल.बी.एस. पी.जी. कॉलेज, गोंडा (उ.प्र.)

सारांश :

काम करते समय नैतिक रूप से क्या सही है क्या गलत है यह तय करने के नियम ,सिद्धांत और मानक को ही व्यावसायिक नैतिकता कहते हैं। व्यवसायिक नैतिकता उन प्रथाओं और नीतियों का समूह है जिसका उपयोग कंपनियां वित्त, बातचीत और सौदों कारपोरेट, सामाजिक जिम्मेदारों और बहुत कुछ के बारे में निर्णय लेने के लिए करती है नैतिकता के मजबूत सेट के बिना एक व्यवसाय कानून का उल्लंघन कर सकता है वित्तीय नुकसान एवं नैतिक सुविधाओं का सामना कर सकता है । लेकिन अच्छी व्यावसायिक नैतिकता ग्राहकों ,कर्मचारियों और अन्य हितधारकों से यह सुनिश्चित करती है कि एक कंपनी नियमों का पालन करती है और सही काम करती है जब कोई ब्रांड विश्वास खो देता है तो यह बिक्री को खतरे में डाल सकता है और नुकसान का सामना करना पड़ सकता है।

नैतिकता रोजमर्रा के व्यावसायिक लेनदेन में आपकी कल्पना से कहीं ज्यादा आम भूमिका निभाती है नैतिकता कोई कानून नहीं है जिसका कंपनियों को पालन करना होता है बल्कि यह मार्गदर्शन सिद्धांतों का एक समूह है जिसका संगठनों को पालन करना चाहिए। नैतिकता शब्द का मूल शब्द ग्रीक शब्द "एथिक्स" से लिया गया है । जिसका अर्थ चरित्र, मानक ,आदर्श या नैतिकता से है जो समाज में प्रचलित होते हैं । व्यावसायिक नैतिकता का सीधा संबंध व्यावसायिक उद्देश्य, चलन तथा तकनीक से है जो समाज के साथ–साथ चलन में रहते हैं । एक व्यवसायिक इकाई को चाहिए की वह सही मूल्य वसूल करें, सही तोल कर दे , ग्राहकों से सद्भावना पूर्ण व्यवहार करें। नैतिकता में मानवीय कार्यों का यह निश्चित करने के लिए आलोचनात्मक विश्लेषण किया जाता है कि वह सत्य एवं न्याय जैसे दो महत्वपूर्ण मंडलों के आधार पर सही या गलत है । नैतिकता का सिद्धांत है कि व्यावसायिक इकाइयों को सामाजिक आकांक्षाओं का ध्यान रखते हुए व्यावसायिक क्रियाएं करनी चाहिए तथा लाभ अर्जित करना

चाहिए । समाज में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति के कुछ सामाजिक उत्तरदायित्व होते हैं उसे सामाजिक मूल्यों का आदर करना चाहिए एवं व्यवहार कुशल

होना चाहिए । व्यवसाय के सामाजिक उत्तरदायित्व का अर्थ उन नीतियों का अनुसरण करना ,उन निर्णय को लेना अथवा उन कार्यों को करना है जो समाज के लक्ष्यों एवं मूल्य की दृष्टि से वांछनीय है । यदि देखा जाए तो एक व्यवसाय के कानूनी उत्तरदायित्वों की अपेक्षा सामाजिक उत्तरदायित्व अधिक विस्तृत

होते हैं । सामाजिक उत्तरदायित्व में स्वैच्छिकता निहित है व्यावसायिक नैतिकता, कॉर्पोरेट प्रशासन, अंदरूनी व्यापार ,रिश्वतखोरी ,भेदभाव कॉरपोरेट सामाजिक जिम्मेदारी और विवेकाधीन जिम्मेदारियों सहित विषयों के संदर्भ में अपनाई गई उपयुक्त व्यावसायिक नीतियों का अध्ययन करती है । व्यावसायिक नैतिकता को वर्तमान में एक संगठन के भीतर निर्णय लेने की प्रक्रिया का एक मूलभूत हिस्सा माना जाता है हाल के बदलते कारोबारी परिदृश्य में व्यवसाय नैतिकता से संबंधित मुद्दों को प्रमुखता मिली है उभरते बाजारों में निवेशकों की चिंता में प्रबंधन की गुणवत्ता के साथ–साथ व्यावसायिक नैतिक ढांचे और उनमें ली गई निर्णय प्रक्रिया पर जोर दिया जाता है ।

व्यावसायिक नैतिकता समकालीन संगठनात्मक मानको, सिद्धांतों , मूल्यों और मानदंडों के सेट को संदर्भित करती है जो व्यावसायिक संगठन में किसी व्यक्ति के कार्यों और व्यवहार को नियंत्रित करते हैं ।व्यावसायिक नैतिकता के दो आयाम है मानक व्यावसायिक नैतिकता एवं वर्णनात्मक व्यावसायिक नैतिकता । व्यावसायिक नैतिकता व्यवसाय के दर्शन को दर्शाती है जिसका एक उद्देश्य कंपनी के मौलिक उद्देश्यों को निर्धारित करना है । व्यवसाय की दुनिया में नैतिकता के संबंध में किसी व्यक्ति के निर्णय को प्रभावित करता है। किसी व्यक्ति की व्यक्तिगत आचार संहिता में अखंडता, ईमानदारी , संचार, सम्मान, करुणा और सामान्य लक्ष्यों जैसे अलग – अलग गुण शामिल है । यदि कोई देश अत्यधिक गरीबी की राह से गुजरता है तो बड़ी कंपनियां लगातार बढ़ती रहती है लेकिन छोटी कंपनियां अपने अस्तित्व को बचाने के लिए किसी भी तरीके को अपनाने और परिमार्जन करने के लिए मजबूर हो जाती हैं और छोटी कंपनियां अनैतिक तरीकों को अपनाने के लिए बाध्य हो जाती हैं।

व्यावसायिक नैतिकता के सिद्धांत :–

कानूनी और नैतिक रूप से सफल होकर डेड कालिक सफलता अधिक स्थाई और स्थिर रूप से प्राप्त की जा सकती है इसलिए यहां व्यावसायिक नैतिकता के 11 महत्वपूर्ण सिद्धांत दिए गए हैं ।

१. जवाबदेही :– नैतिक कार्यकर्ता अपने प्रति अपने सहकर्मियों , अपने व्यवसायों और अपने समुदायों के प्रति अपने कार्यों के नैतिकता को समझते हैं और उसके लिए व्यक्तिगत रूप से जवाबदेही देते हैं ।

२. दूसरों के प्रति सम्मान :– सम्मान हर कर्मचारी के मानवाधिकारों ,सम्मान, स्वतंत्रता हितों और गोपनीयता के प्रति पूर्ण प्रतिबद्धता से दिखाया जाता है इसमें यहां स्वीकार करना शामिल है कि हर किसी को प्रतिशोध या अन्य भेदभाव के डर के बिना अपने विचार और राय व्यक्त करने का अधिकार है नैतिकता को बनाए रखने वाले अधिकारी लिंग , जातीयता या राष्ट्रीय मूल की परवाह के बिना सभी के साथ सम्मान और गर्व के साथ व्यवहार करते हैं ।

३. नेतृत्व :– नेतृत्व नैतिक निर्णय लेने के माध्यम से उत्कृष्टता के प्रति प्रतिबद्धता है कंपनियों और व्यावसायिक अधिकारी अपने कार्यों के माध्यम से एक अच्छा उदाहरण स्थापित करने का प्रयास करते हैं ।

४. ईमानदारी :– कंपनी के प्रत्येक कर्मचारी को अपने कार्य के प्रति ईमानदार रहना चाहिए और सभी कार्यों में सच बोलने के लिए समर्पित होना चाहिए । इसमें जानबूझकर गलत बयान देना , अतिशयोक्ति करना , गलत बयानी करना या चुनिंदा चूंक करना शामिल नहीं है । चाहे खबर सकारात्मक हो या नकारात्मक हो यहां इतनी नैतिकता अवश्य हो कि एक नैतिक कर्मचारी व्यक्तियों के साथ ईमानदारी से पेश आए। मजबूत ईमानदारी , आपकी ईमानदारी और कानूनों और नियमों के प्रति प्रतिबद्धता को प्रभावित कर सकती है । जो सच है चाहे आप दूसरों के साथ काम करें या अकेले । संगठन और व्यक्ति लगातार कार्य करके और बोलकर ईमानदारी प्रदर्शित करते हैं जो आत्मविश्वास और विश्वास को बढ़ाता है। इसके अतिरिक्त ईमानदारी के वादे निभाना, दायित्वों को निभाना , समय सीमा को पूरा करना और व्यक्तिगत और व्यावसायिक प्रयासों में बेईमान व्यवहार से बचाना शामिल है ।

५. नियमों का अनुपालन :– कंपनियां न्यूनतम स्तर शुरू करके और इन उद्योग नियमों को एक रूपरेखा के रूप में उपयोग करके अधिक विशिष्ट नीतियां बन सकती हैं कंपनियों को नियम बनाने के साथ–साथ नियमों का पालन भी करवाना चाहिए ।

६. वफादारी :– सहकर्मियों, ग्राहकों, व्यापारिक साझेदारों और आपूर्तिकर्ताओं के प्रति वफादार होना साथ ही गोपनीय रूप से प्राप्त की गई जानकारी का कभी भी खुलासा न करना, वफादारी प्रदर्शित करने के तरीके हैं। वफादार कर्मचारी हितों के टकराव से बचते हैं, कंपनी के अच्छे नाम को बनाए रखने और बढ़ाने में योगदान देते हैं , और अपने सहकर्मियों का उत्साह बढ़ाते हैं ।

७. पर्यावरण संबंधी चिंता :– व्यवसाय के मालिकों, कर्मचारियों और ग्राहकों को वैश्विक जलवायु स्थित का ध्यान देना जारी रखना चाहिए । पर्यावरण पर आपके नकारात्मक प्रभाव को सीमित या काम करने वाले निर्णय लेना नैतिक व्यावसायिक प्रथाओं का हिस्सा है। उदाहरण के लिए , कार्बन उत्सर्जन करना, उत्पन्न होने वाले कच्चे माल की मात्रा को कम करना , ऊर्जा बचत उपायों को बढ़ावा देना आदि।

८. पारदर्शिता :– यदि कोई संगठन पारदर्शिता के लिए प्रतिबद्ध है तो कम्पनी को कार्पोरेट से संबंधित जानकारी और नीतियों का संबंधित पक्षों तक पहुंचना आवश्यक है । उदाहरण के लिए, इसमें मूल्य वृद्धि , वेतन ,नियुक्ति ,पदोन्नति जारी करना, कार्य स्थल पर उल्लंघनों से निपटना और कर्मियों को नौकरी से निकलना आदि शामिल है।

९. निष्पक्षता :– दूसरों के साथ निष्पक्ष व्यवहार करना और जैसा आप चाहते हैं वैसा व्यवहार करना सभी व्यापारियों और संबंधों की आधारशिला होनी चाहिए। निष्पक्षता का अर्थ है सभी के साथ सम्मानपूर्ण और समान व्यवहार करना । कभी भी अपने अधिकार का दुरुपयोग ना करना और ना ही कभी भी अपने या अपनी कंपनी के आगे बढ़ाने के

लिए किसी गलत कार्य को बढ़ावा देना। कार्यस्थल में निष्पक्षता एक ऐसे समुदाय को बढ़ावा देती है जहां कर्मचारी सहज महसूस करते हैं, जिससे जुड़ाव बढ़ता है।

१०. कानूनों का सम्मान :– संगठनों को सभी स्थानीय , राज्य और संघीय विनिमयों और कानूनों का पूरी तरह से पालन करना आवश्यक है । कानून का पालन करने वाले व्यवसाय और कर्मचारी किसी भी अन्य अनिवार्य संघटनात्मक नियमों प्रथाओं और प्रक्रियाओं का भी पालन करते हैं ।

शोध समस्या का विवरण :–

व्यावसायिक नैतिकता सात सिद्धांतों पर कार्य करती है । ईमानदारी , सत्यनिष्ठा , गोपनीयता , अनुकंपा ,निष्ठा , सम्मान और निजता का अधिकार। व्यावसायिक नैतिकता के प्रति प्रतिबद्धता दिखाने वाली कंपनियां अपने ग्राहकों और कर्मचारियों का सम्मान हासिल करती है आप जिस कंपनी में काम करते हैं उसकी प्रतिष्ठा भी आपका ही प्रतिबिंब है । कंपनी की कर्मचारी पुस्तिका या मानव संसाधन नीतियों में व्यावसायिक नैतिकता का एक अनुभाग होगा जो कर्मचारी को यह बताता है कि उन्हें दूसरों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए । इसकी समीक्षा करने से कंपनी को यह समझने में मदद मिलेगी कि अपने कार्य स्थल में व्यावसायिक नैतिकता को कैसे बनाए रखा जाए ।

अध्ययन का उद्देश्य :– इस अध्ययन का उद्देश्य निम्नलिखित हैं।

१. व्यावसायिक नैतिकता की अवधारणा तथा प्रासंगिकता का की व्याख्या करना ।

२. समाज में संचालित विभिन्न व्यवसायों एवं कंपनियों आदि में कार्यरत कर्मचारियों की एवं व्यावसायिक नैतिकता का परिचयात्मक विवरण प्रस्तुत करना ।

३. समाज में व्यावसायिक नैतिकता की वर्तमान स्थिति की समीक्षा करना ।

४. व्यावसायिक नैतिकता की समस्याओं , चुनौतियों और संभावनाओं की पहचान करना तथा समस्याओं से निपटने के उपाय सूझाना ।

अध्ययन का औचित्य :–

समाज में कुछ व्यवसाय इस बात से सहमत नहीं है कि उन्हें व्यापारिक व्यवहार में नैतिकता की आवश्यकता है । वे यह भी कहते हैं कि व्यापार और नैतिकता विपरीत शब्द है और इसलिए उन्हें जोड़ना उचित नहीं है। व्यवसाय में पैसा कमाना सबसे महत्वपूर्ण है यह किस प्रकार किया जाए यह महत्व नहीं रखता । व्यापार मूल्य से संचालित होता है और मूल्य मार्गदर्शन करते हैं कि एक व्यवसाय प्रबंधन को क्या करना चाहिए क्या नहीं करना चाहिए । व्यवसाय प्रबंधक को अपने दृष्टिकोण में व्यावहारिक होना चाहिए । यहां उनके अनुभव और कौशल से पता चलता है कि किसी स्थिति में निर्णय कैसे काम करता है प्रबंधक को यह महसूस करना चाहिए कि उच्चतम

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

संख्या के लिए क्या अच्छा है । व्यवसाय नैतिकता के अध्ययन का औचित्य मानवीय व्यवहारों का मूल्यांकन करना और नैतिक मानकों का पालन करना है ।

व्यावसायिक नैतिकता में निम्न मानकों को स्थापित करना चाहिए ।

☞ व्यक्तिगत स्तर पर यह नीति निर्धारित करनी चाहिए कि दूसरों की संपत्ति या संगठन की संपत्ति का दुरुपयोग न किया जाए ।

☞ व्यावसायिक संगठन को कर्मचारियों और अन्य हितधारकों के साथ व्यवहार करने में उचित व्यवहार का पालन करें ।

व्यावसायिक संगठन के पास सभी स्तरों पर खुला और बेहतर संचार होना चाहिए ।

☞ संगठन को हितधारकों की अधिकतम संख्या का ध्यान रखना चाहिए और शेयरधारकों , ग्राहकों आपूर्तिकर्ताओं , कर्मचारियों बैंकों और वित्तीय संस्थानों, सरकार और संगठन से जुड़े अन्य सभी लोगों के साथ नैतिक साधनों का पालन करना चाहिए।

अध्ययन की परिकल्पना :–

हमारा अध्ययन निम्नांकित प्राकल्पनाओं पर आधारित रहा है

व्यावसायिक नैतिकता को विकसित कर सामाजिक मूल्यों को बढ़ावा देना ।

☞ व्यावसायिक संगठनों को उचित मूल्य में वस्तुओं एवं सेवाओं को विक्रय करने के लिए प्रोत्साहित करना ।

☞ मानवीय एवं सामाजिक कर्तव्यों का निर्वहन करना ।

☞ व्यावसायिक संगठन संस्थान से अपने ग्राहकों को सद्व्यवहार एवं सद्भावनापूर्ण व्यवहार करने की अपेक्षा करना ।

शोध प्रणाली :–

प्रस्तुत अध्ययन विश्लेषणात्मक प्रकृति का है इस उद्देश्य से आंकड़ों को एकत्रित करने के लिए प्राथमिक स्रोत ,द्वितीयक स्रोत (दोनों स्रोतों की सहायता ली गई है ।) पत्र पत्रिकाओं, पुस्तकें , संदर्भ , वार्षिकी , राज्य की रिपोर्ट, केंद्र सरकार की रिपोर्ट, संगठनों के रिपोर्ट आर्थिक सर्वेक्षण , संगोष्ठी, सेमिनार पत्र , वेबसाइट पर उपलब्ध सामग्री इत्यादि की सहायता ली गई है । आवश्यकता अनुसार प्राथमिक आंकड़ों का संग्रहण साक्षात्कार विधि से भी किया गया है ।

निष्कर्ष :–

व्यावसायिक नैतिकता की नीतियां मुख्य रूप से उपयोगिता वादी चिंताओं में निहित है और वह मुख्य रूप से कंपनी के कानूनी उत्तरदायित्व को सीमिति करने के लिए या एक सुदृढ़ व्यापारिक नागरिक होने की उपस्थिति देकर सार्वजनिक पक्ष को आकर्षित करने के लिए आवश्यक है नैतिक व्यवहार का प्रबंधन आज व्यावसायिक संगठनों के सामने सबसे व्यापक और जटिल समस्याओं में से एक है । व्यवसाय की नैतिक स्थिति बनाए रखना

प्रबंधक की जिम्मेदारी होती है। इस शोध के अंतर्गत व्यापारिक नैतिकता की अवधारणा एवं प्रासंगिकता का वर्णन किया गया है।

संदर्भ :–

१. व्यावसायिक नैतिकता पर समकालीन विचार – (दुस्का आर. (2007))

२. मानव संसाधन विकास में महत्वपूर्ण सोच –(इलियट सी. टर्नबुल)

३. बिजनेस एथिक्स का सहयोगी – (फ्रडरिक आर ई.)

४. मानव संसाधन प्रबंधन – नैतिकता एवं रोजगार – (पिनिंगटन एवं मैकलिन)

५. व्यवसाय की नैतिकता – मानव धन के लिए पेशा – (मचान टी. आर.)

६. व्यावसायिक नैतिकता के लिए एक महत्वपूर्ण पाठ – (जेम्स सी. , पार्कर एम. और अन्य)

७. बौद्धिक संपदा का अधिकार – (एंडासन)

८. एन.सी.ई.आर.टी. व्यवसायिक अध्ययन

९. व्यापार , नैतिकता और स्थिरता – (मीनहोल्ड आर.)

१०. व्यावसायिक नैतिकता पर निबंध– परिभाषा , कारक और उद्देश्य – (किरण एन.)

११. Philoid.Com..

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

SHIKSHA SAMVAD

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed or Refereed Research Journal
ISSN: **2584-0983 (Online)** Impact-Factor, **RPRI-3.87**
Volume-02, Issue-03, March- 2025
www.shikshasamvad.com
Certificate Number-March-2025/03

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

अमित कुमार मिश्र, वीरेन्द्र कुमार और प्रो. विजय कुमार अग्रवाल

For publication of research article title

"सामाजिक विज्ञान शिक्षण एवं मूल्य नीतिगत परिप्रेक्ष्य"

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-02, Issue-03, Month March, Year- 2025, Impact-Factor, RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.shikshasamvad.com